MAHANTH MAHADEVANAND MAHILA MAHAVIDYALAYA, ARA

ACTIVITY REPORT

Name of the Department: Department of History

Name of activity: National Seminar on 'Archeological and literary Study of Temples of Bihar'.

Level of activity: National Departmental/Institutional/State/National/International

Date of activity: 15-16th July 2022

Head of The department: Dr. Anupama

Convener of Seminar – Dr. Rajiv Kumar, Associate Professor, N.S.S. Co-coordinator, Dept. Of History, V.K.S.U

Name of Resource person/s: List of Resource Persons attached.

Number of teacher participated: 30 of M.M. Mahila College

Number of students and participants: 180

Fruitful Outcome of the activity:

Detailed report and outcome of the activity attached.

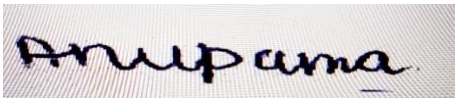

Signature

List of Resource Persons with Institutional Address

1.Keynote Address Chief Guest- Acharya Kishore Kunal, Mahavir Mandir Trust, Patna. Bihar.

2. Address by Special Guest – Dr. Balmukund Pandey, National Org. Secretary in Akhil Bhartiya Itihas Sanklan Yojna, New Delhi.

3. Address by Distinguished Speaker Prof. Baidyanath Labh, Vice Chancellor, Nava Nalanda Mahavira, Nalanda, Bihar.

4. Address by Distinguished Speaker Dr. Rajeev Ranjan, Professor, Dept. of History, College of Commerce, Arts and Sciences, Patna, Bihar.

5. Address by Pro- Vice Chancellor, Prof. (Dr.) C.S. Choudhury, V.K.S.U, Ara, Bihar.

6. Prof. Dr. Dhirendra Kumar Singh, Registrar, V.K. S. U, Ara, Bihar.

7. Dr. Sunita Sharma, Associate Professor, Dept. of History, B.D.College, PPU, Patna. Bihar.

8. Dr. Rama Kant Sharma, Associate Professor, Dept. of History, Ram Krishna Dwarka College, Patna.

9. Dr. Shivesh Kumar, Associate Professor, Dept. of History, B.R.A., Bihar University, Muzaffarpur, Bihar.

10. Dr. Urvashi Gautam, Assistant Professor, Dept. Of History, Ganga Devi Mahila Mahavidyalya, PPU, Patna, Bihar.

11. Dr. Md. Niyaz Hussain,Associate Professor, Department of History, Maharaja College, V.K.S.U, Ara, Bihar.

12. Dr. Vijya Lakshmi Associate Professor, Dept. of Home Science, M.M. Mahila Mahavidyala, V.K.S.U, Ara, Bihar.

13. Dr. Vandana Singh, Assistant Professor, Department of History, Rambriksh, Benipuri Mahila Mahavidyalaya, B.R.A, Bihar University, Muzaffarpur, Bihar.

14. Dr. Chintu, Assistant Professor, Head of Department Political Science, A.S.College Bikramganj, Rohtas Veer Kunwar Singh University, Bihar.

15. Prof. Piyush Kamal, PG. Department of History, Magadh University, Bodh Gaya. Bihar.

16. Dr. Vikas Singh, Archaeologist, Banaras Hindu University, Varanasi.

17. Dr. Parth Sarthi, Associate Professor, Dept. of History, Anugrah Memorial College, Bodh Gaya. Bihar.

18. Prof. Piyush Kamal, PG. Department of History, Magadh University, Bodh Gaya, Bihar.

19. Dr. Niraj Kumar, CCDC, V.K.S.U, Ara, Bihar.

MEDIA COVERAGE/PHOTOGRAPHS

epaper हिन्दुस्तान

Share Copy url Save Font Size D'load Image Image Text Listen

बिहार के प्राचीन मंदिरों के किवदंतियों को संकलित करना जरूरी

आचार्य कुणाल

आरा, निज प्रतिनिधि। महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की ओर से प्रायोजित व महिला कॉलेज इतिहास विभाग एवं इतिहास संकलन समिति, बिहार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत महिला कॉलेज सभागार में हुई। संगोष्ठी के विषय बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन पर वक्ताओं ने अपनी बातों को रखा। उद्घाटन समारोह में विभिन्न विवि व अलग-अलग क्षेत्र के विद्वानों ने शिरकत किया।

मुख्य अतिथि श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि यह संगोष्ठी ऐतिहासिक विमर्श, चिंतन एवं अनुशीलन का सारस्वत शिविर बने। उन्होंने बिहार की तीन विभूतियों कालिदास, मंडल मिश्र एवं वाल्मीकि और मौलिक शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। बताया कि किस प्रकार बिहार में ही देश का सबसे प्राचीन मंदिर कैमूर का मुंडेश्वरी मंदिर स्थित है। इस पर उनका मौलिक शोध है। बिहार में कई मंदिर ऐसे हैं जिनका साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाण नहीं है। ऐसे में उनके साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाण खोजने की आवश्यकता है, उनसे संबंधित किवदंतियों को संकलित करने की आवश्यकता है।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव बालमुकुंद पांडे ने कहा कि भारतीय संस्कृति व स्थापना में हिंदू मंदिर का विशेष स्थान है। भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना का केंद्र रहे हैं। विश्व परिदृश्य में हिंदू -संस्कृति के अतिरिक्त ऐसी कोई संस्कृति नहीं जिसने इतनी अधिक मात्रा में देवालयों का निर्माण किया हो। विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. बैद्यनाथ लाभ, कुलपति, नव नालंदा महाविहार ने कहा कि मंदिर संस्कृति के केंद्र हैं, जहां हमें मानसिक शांति प्राप्त होती है। वहां जाकर हमारी आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

इतिहास विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, ऑर्टस एण्ड साइंस, पटना के प्रो.राजीव रंजन ने कुछ क्षेत्रीय मंदिरों की चर्चा की और संबंधित प्रचलित कथाएं भी सुनाई। अध्यक्षता करते हुए वीकेएसयू के प्रति कुलपति प्रोफेसर सीएस चौधरी ने कहा कि अध्यात्म कभी विनाशकारी नहीं होता, हमेशा कल्याणकारी होता है। कुलसचिव प्रो धीरेंद्र कुमार सिंह ने कहा कि यह सामयिक विषय है। इस विषय पर गोष्ठी में जो चर्चा हो रही है यह बीज स्वरूप है और इसका फल भविष्य में अवश्य मिलेगा। स्वागत भाषण प्राचार्या डॉ. आभा सिंह ने दिया। उन्होंने मंदिरों के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि प्राचीन काल से ही ये मंदिर शिक्षा के केंद्र के रूप में अपनी भूमिका निभाते रहे हैं। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. राजीव कुमार ने कहा समकालीन समय में बिहार के कई मंदिरों के बारे में लोगों को जानकारी नहीं है, इसीलिए बिहार का इतिहास मंदिरों के इतिहास के बिना अधूरा है। उन्होंने मंदिर को संस्कृति और धर्म प्रचार का संवाहक बताया।

स्मारिका का विमोचन करते आचार्य किशोर कुणाल, प्रोवीसी, कुलसचिव सहित अन्य अतिथि। ह

आरसी कुमारी ने मधुर आवाज में दीपमंत्र का गायन किया। महिला कॉलेज की छात्रा श्वेता, अंकिता, अंजलि, ज्योति और बंटी ने कुलगीत और स्वागत गान गाया। सम्माननीय अतिथियों का स्वागत मोमेंटो, बुके और चादर देकर किया गया। इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया। संचालन डॉ. सुधा रंजनी और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनुपमा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में प्रो. मीना कुमारी, डॉ. शुभा सिन्हा डॉ.लतिका वर्मा, डॉ.फरीदा बानो, डॉ विजया लक्ष्मी, डॉ निधि सिंह, डॉ सादिया हबीब, डॉ सुप्रिया झा, डॉ स्मिता कुमारी, डॉ प्रिया कुमारी, स्नेहा शर्मा, डॉ मनोज कुमार,

देश का सबसे प्राचीन मंदिर है मुंडेश्वरी मंदिर : किशोर कुणाल

आज तक चलेगा बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक व साहित्यिक अध्ययन विषयक संगोष्ठी

जास, आरा : श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि कैमूर जिले का मुंडेश्वरी मंदिर देश का सबसे प्राचीन मंदिर है। उन्होंने कहा कि इस मंदिर के काल खण्ड को लेकर उनका शोध है। बिहार में करीब 4500 मंदिर है, जिसमें सिर्फ पांच सौ मंदिरों का ऐतिहासिक साक्ष्य है। शेष चार हजार मंदिरों का इतिहास किंवदंतियों पर आधारित है। उन्होंने प्रबुद्ध लोगों से अपील की कि जिनके पास मंदिर को लेकर जो किंवदंतियां उपलब्ध है, उसे उपलब्ध करावें, ताकि उसे साहित्यबद्ध किया जा सके। इससे आनेवाली पीढ़ियों को मंदिरों के अस्तित्व के संबंध में जानकारी मिलेगी। क्षेत्रीय इतिहास को संकलित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

आचार्य कुणाल शुक्रवार को एमएम महिला कालेज के इतिहास विभाग, इतिहास संकलन समिति और

एमएम महिला कालेज में राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते अतिथि • जागरण

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। दो दिवसीय संगोष्ठी कालेज के सभागार में 16 जुलाई तक चलेगा। बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक व साहित्यिक अध्ययन विषयक संगोष्ठी का उद्घाटन बतौर आचार्य कुणाल, प्रधानाचार्य डा. आभा सिंह, संयोजक डा. राजीव कुमार व आगत अतिथि से संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित करके किया। उन्होंने कहा कि बिहार की तीन विभूतियों कालिदास, मंडल मिश्र एवं वाल्मीकि और मौलिक शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रति कुलपति प्रो. सीएस चौधरी ने की। इस मौके पर अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव श्री बालमुकुंद पांडे, कुलसचिव डा. धीरेंद्र कुमार सिंह ने विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम के संयोजक डा. राजीव कुमार ने कहा समकालीन समय में बिहार के कई मंदिरों के बारे में लोगों को जानकारी नहीं है। इसीलिए बिहार का इतिहास मंदिरों के इतिहास के बिना अधूरा है। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का मंच संचालन डा. सुधा रंजनी और डा. अनुपमा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर प्रो. मीना कुमारी, डा. शुभा सिन्हा, डा. लतिका वर्मा, डा. फरीदा बानो, डा. विजया लक्ष्मी, डा. निधि सिंह, डा. सादिया हबीब, डा. सुप्रिया झा, डा. स्मिता कुमारी, डा. प्रिया कुमारी, स्नेहा शर्मा, डा.मनोज कुमार, डा. खुशबू कुमारी, डा.विजय श्री, डा. रश्मि सिन्हा आदि थे।

Dainik Bhaskar

मंदिरों का पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक अध्ययन' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन आज से

पुस्तक विमोचन व मंचासीन अतिथि।

सभागार में उपस्थित शिक्षाविद्।

आरा (एसएनबी)। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा इतिहास विभाग, महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा एवं इतिहास संकलन समिति, बिहार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 जुलाई से एम.एम. महिला कॉलेज में प्रारंभ हुआ, जिसका समापन 16 जुलाई को होगा। संगोष्ठी का विषय है 'बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन'। उद्घाटन समारोह में विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा अलग-अलग क्षेत्र के विद्वानों ने शिरकत की।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि यह संगोष्ठी एक ऐतिहासिक विमर्श, चिंतन एवं अनुशीलन का सारस्वत शिविर बने। अन्वेषी विद्वत मनीषियों का परस्पर प्रयोग हवन-कुंड एवं पुनीत चिंतनशाला ही ना बने, अपितु भारतीय संस्कृति एवं आर्ष संस्कार की दिव्यता, आध्यात्मिक उन्नयन का बौद्धिक केंद्र बने, जहां से पूरी दुनिया को भारत की संस्कृति चेतना का नवीन नियमन उद्घोषित हो।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव बालमुकुंद पांडे जो कि विशेष अतिथि के रूप में मौजूद थे। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति व स्थापना में हिंदू मंदिर का विशेष स्थान है। भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना का केंद्र रहे है। ये देवालय लौकिक और पारलौकिक अर्थात् कर्मकांड व आध्यात्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक, वैज्ञानिक चेतना के केंद्र भी है। विश्व परिदृश्य में हिंदू-संस्कृति के अतिरिक्त ऐसी कोई संस्कृति नही, जिसने इतनी अधिक मात्रा मे देवालयों का निर्माण किया हो। विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. वैद्यनाथ लाभ, कुलपति, नवनालंदा महाविहार एवं प्रो. राजीव रंजन, इतिहास विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एण्ड साइंस, पटना मौजूद थे। विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. चौधरी एवं कुल सचिव प्रो. धीरेंद्र कुमार सिंह ने इस दो दिवसीय संगोष्ठी की सफलता हेतु शुभकामनाएं और बधाइयां दी। अध्यक्षता और स्वागत भाषण प्राचार्या डॉ. आभा सिंह ने किया। संयोजक डॉ. राजीव कुमार ने कहा समकालीन समय में बिहार के कई मंदिरों के बारे में लोगों को जानकारी नही है इसीलिए बिहार का इतिहास मंदिरों के इतिहास के बिना अधूरा है। कार्यक्रम के प्रारंभ में आरसी कुमारी ने मधुर आवाज में दीपमंत्र का गायन किया। तत्पश्चात् महिला कॉलेज की छात्राओं ने कुलगीत और स्वागत गान गाया। सम्माननीय अतिथियों का स्वागत मोमेंटो, बुके और चादर देकर किया गया।

इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया, जिसमें बिहार के राज्यपाल, विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव आदि की शुभकामना-पत्र और प्रतिभागियों के आलेख का शोध-सार प्रकाशित किया गया है। कार्यक्रम में महिला कॉलेज के सभी शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम के उद्घाटनसत्र का मंच संचालन हिंदी की विभागाध्यक्ष डॉ. सुधा रंजनी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन किया इतिहास विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ अनुपमा ने। प्रो. मीना कुमारी, डॉ. शुभा सिन्हा डॉ. लतिका वर्मा, डॉ. फरीदा बानो, डॉ. विजया लक्ष्मी, डॉ. निधि सिंह, डॉ. शशि भूषण देव, डॉ. चिन्टू आदि मौजूद थे।

मुंडेश्वरी माता का मंदिर सबसे प्राचीन : आचार्य कुणाल

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

आरा। महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा में भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा इतिहास विभाग, महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा एवं इतिहास संकलन समिति, बिहार के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन शुक्रवार से प्रारंभ हुआ। संगोष्ठी का विषय बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन है। अतिथियों द्वारा कॉलेज के संस्थापक की प्रतिमा पर माल्यार्पण सामूहिक दीप प्रज्वलन छात्राओं द्वारा स्वागत और कुलदीप तथा सभी सम्मानित अतिथियों को बुके और अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री महावीर मंदिर न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि यह संगोष्ठी एक ऐतिहासिक विमर्श, चिंतन एवं अनुशीलन का सारस्वत शिविर बने। उन्होंने बिहार की तीन विभूतियों कालिदास, मंडल मिश्र एवं वाल्मीकि की चर्चा की और मौलिक शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। देश का सबसे प्राचीन मंदिर कैमूर का मुंडेश्वरी मंदिर प्रमाणिकता के साथ बताया जिस पर उनका मौलिक शोध है। बिहार में कई मंदिर ऐसे हैं जिन्का साहित्यिक एवं पुरातात्विक प्रमाण नहीं उनका प्रमाण खोजने की आवश्यकता है।

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव बालमुकुंद पांडे जो कि विशेष अतिथि के रूप में मौजूद थे उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति व स्थापना में हिंदू मंदिर का विशेष स्थान है। भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना का केंद्र रहे हैं। विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो. बैद्यनाथ लाभ, कुलपति नालंदा विश्वविद्यालय ने कहा कि मंदिर संस्कृति के केंद्र हैं। जहां हमे मानसिक शांति प्राप्त होती है। वहां जाकर हमारी आत्मा का शुद्धिकरण होता है।

भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना का केंद्र

➲ **बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी शुरू**

संवाददाता, आरा

पुस्तक का विमोचन करते अतिथि.

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा इतिहास विभाग, महंत महादेवानंद महिला महाविद्यालय, आरा एवं इतिहास संकलन समिति, बिहार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 जुलाई से एमएम महिला कॉलेज में प्रारंभ हुआ, जिसका समापन 16 जुलाई को होगा. संगोष्ठी का विषय है 'बिहार के मंदिरों का पुरातात्विक एवं साहित्यिक अध्ययन'. उद्घाटन समारोह में विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा अलग-अलग क्षेत्रों के विद्वानों ने शिरकत की. संगोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य किशोर कुणाल ने कहा कि यह संगोष्ठी एक ऐतिहासिक विमर्श, चिंतन एवं अनुशीलन का सारस्वत शिविर बने. अन्वेषी विद्वत मनीषियों का परस्पर प्रयोग हवन-कुंड एवं पुनीत चिंतनशाला ही ना बने. अपितु भारतीय संस्कृति एवं आर्ष संस्कार की दिव्यता, आध्यात्मिक उन्नयन का बौद्धिक केंद्र बने, जहां से पूरी दुनिया को भारत की संस्कृति चेतना का नवीन नियमन उद्घोषित हो. अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के संगठन सचिव बालमुकुंद पांडे जो कि विशेष अतिथि के रूप में मौजूद थे. उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति व स्थापना में हिंदू मंदिर का विशेष स्थान है. भारत में देवस्थल हिंदू समाज की चेतना के केंद्र रहे हैं. ये देवालय लौकिक और पारलौकिक अर्थात कर्मकांड व आध्यात्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक, वैज्ञानिक चेतना के केंद्र भी हैं. विश्व परिदृश्य में हिंदू-संस्कृति के अतिरिक्त ऐसी कोई संस्कृति नहीं, जिसने इतनी अधिक मात्रा में देवालयों का निर्माण किया हो. विशिष्ट वक्ता के रूप में प्रो बैद्यनाथ लाभ, कुलपति, नव नालंदा महाविहार एवं प्रो राजीव रंजन, इतिहास विभाग, कॉलेज ऑफ कॉमर्स, आर्ट्स एण्ड साइंस, पटना मौजूद थे. वीकेएसयू के प्रति कुलपति प्रोफेसर डॉ केसी चौधरी एवं कुल सचिव प्रो डॉ धीरेंद्र कुमार सिंह ने इस दो दिवसीय संगोष्ठी की सफलता हेतु शुभकामनाएं और बधाइयां दीं.

कार्यक्रम की अध्यक्षता और स्वागत भाषण प्राचार्या डॉ आभा सिंह ने किया. उन्होंने कहा कि सेमिनार के माध्यम से प्रतिभागी बिहार के मंदिरों का एक पुरातात्विक और साहित्यिक अध्ययन कर पाएंगे. उनके अनुसार प्राचीन काल से ही भारतीय मंदिर विभिन्न विचारों, लोगों, धर्मों, संस्कृतियों और वास्तुकला का केंद्र रहा है. संयोजक डॉ. राजीव कुमार ने कहा कि समकालीन समय में बिहार के कई मंदिरों के बारे में लोगों को जानकारी नहीं है. इसीलिए बिहार का इतिहास मंदिरों के इतिहास के बिना अधूरा है. दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ. जिसमें आरसी कुमारी ने मधुर आवाज में दीपमंत्र का गायन किया तत्पश्चात् महिला कॉलेज की छात्राओं ने कुलगीत और स्वागत गान गाया. सम्माननीय अतिथियों का स्वागत मोमेंटो, बूके और चादर देकर किया गया. इस अवसर पर स्मारिका का विमोचन किया गया. जिसमें बिहार के राज्यपाल, विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव आदि की शुभकामना-पत्र और प्रतिभागियों के आलेख का शोध-सार प्रकाशित किया गया है. इस कार्यक्रम में महिला कॉलेज के सभी शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मी उपस्थित थे. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र का मंच संचालन हिंदी की विभागाध्यक्ष डॉ. सुधा रंजनी और धन्यवाद ज्ञापन इतिहास विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ अनुपमा ने किया. प्रो मीना कुमारी, डॉ शुभा सिन्हा, डॉ लतिका वर्मा, डॉ फरीदा बानो, डॉ विजया लक्ष्मी, डॉ निधि सिंह, डॉ शशि भूषण देव, डॉ चिंटू आदि मौजूद थे.

प्रभात खबर Sat, 16 July 2022
https://epaper.prabhatkhabar.com/c/69206194

Prabhat Khabar